Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2501I01S01V13P0002

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Jan'25
Issue–I(I), Volume–XIII

हिन्दु धर्म के मङ्गल कार्यों में शंख ध्वनि का महत्त्व

Baturam Sarkar
Assistant Professor
Department of Sanskrit, Alipurduar University,
Alipurduar-736122, W.B., India.
sarkarbaturam@gmail.com

शोधसारः- देव-मन्दिर में शंखनाद करना अत्यन्त पुण्यप्रद बताया गया है। देवताओं को भी वह अत्यन्त प्रिय है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'हिन्दु धर्म के मङ्गल कार्यों में शंख ध्वनि का महत्त्व' पर प्रकाश डाला गया है।

बीजशब्दः- भारतीय संस्कृति, हिन्दू धर्म, वाद्य, शंख, शंखध्वनि।

प्रस्तावनाः- हिन्दू धर्म के सभी मङ्गल कार्यों में शंख ध्वनि परम मङ्गलमय समझी जाती है। युद्ध में भी शंख ध्वनि का विशेष महत्व है। संसार भर का यह आम रिवाज है कि जब आपस में युद्ध करने की इच्छा से दो दल के सैनिक युद्ध करने के लिये आमने सामने डट जाते हैं, तो उन्हें युद्ध के लिये तैयार होने की चेतावनी देने के तौर पर सेनापति बिगुल बजाकर सूचना देता है कि लड़ने का समय होगया, तैयार हो जाओ। यह प्रथा प्राचीन समय से चली आती है और आज भी संसार के सभ्य देशों में इस प्रथा का पालन यथा सम्भव किया जाता है। इसी प्रथा के अनुसार पूर्वकाल में पितामह भीष्म ने भी अपना शंख बजाकर सैनिकों को रण सूचना दी थी।

यथा-

"तस्य सञ्जनयन् हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शंङ्खं दध्मौ प्रतापवान्॥"[i]

यहां पर सिंह के नाद से शंख की उपमा दी गई है। संसार में जितने भी वाद्य हैं, वे सब तीन प्रकार के होते हैं-

१. सतोगुणी, २. रजोगुणी और ३. तमोगुणी।

इन तीनों गुण वाले वाद्यों को देखने में तो कोई अन्तर मालुम नहीं होता किन्तु इनके बजाने के क्रम में, स्वर निकालने के ढङ्ग में एवं गति में भेद होता है। यह भेद समय के अनुसार हुआ करता है। जैसे किसी देवता के पूजन के समय जब शंख बजाया जाता है उसे सतोगुणी शंख ध्वनि कहा जाता है, जो शंख संग्राम-युद्ध बजाया जायेगा उसे रजोगुणी कहेंगे और जब मुर्दे के साथ, श्मशान जाते समय बजाया जाता है उसे तमोगुणी कहते हैं।

इन तीनों प्रकार की ध्वनियों में अपना-अपना अलग गुण होता है। देवपूजा के समय जो शंख बजेगा उसकी स्वरावली ऐसे ढङ्ग की होगी कि भक्तों के मन में देवता के प्रति श्रद्धा उमड़ पड़ेगी। युद्ध के समय बजने वाले शंख की ध्वनि भयंकरता लिये हुए होगी और वह मनुष्यों में वीरता का संचार करेगी, उसे सुनकर कायरों का भी खून खौलने लगता है, फलस्वरूप वे युद्ध के लिये तैयार हो जाते हैं। मुर्दे के साथ जब शंख और घड़ियाल बजाते हैं तो सभी का हृदय समवेदना प्रकट करता है। इससे सिद्ध हुआ कि एक ही शंख को भिन्न-भिन्न अवसरों पर बजाने से भिन्न-भिन्न भाव उत्पन्न होते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में संजय ने शंखों के विभिन्न नामों का वर्णन इस प्रकार किया है-

"पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशंङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः॥
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ॥"[ii]

अर्थात्- हृषीकेश भगवान् श्री कृष्ण ने 'पाञ्चजन्य' नामक, अर्जुन ने 'देवदत्त' नामक और भीमसेन ने 'पौण्ड्र' नामक शंख बजाया। इसी प्रकार राजा युधिष्ठिर ने 'अनन्तविजय' नामक, नकुल ने 'सुघोष' नामक और सहदेव ने 'मणिपुष्पक' नामक शंख बजाया।

"स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्॥"[iii]

शंखों की वह आवाज आकाश और पृथ्वी को गुंजती हुई कौरवों के हृदयों को विदीर्ण करने लगी।

यह शक्ति थी, इस छोटे से वाद्य, शंख में। शंख को बजाने में मुंह की फूंक का ढङ्ग अरौ ही प्रकार का होता है। फूंक जोर से दी जाती है और फूंक के साथ ही साथ गालों को खूब फुलाकर होठों से शब्द के साथ हवा फेंकी जाती है। हवा को घटाने-बढ़ाने से स्वर मन्द्र व तीव्र होता है। इससे आवाज ऊंची-नीची होती है। अन्य बाजों की तरह इसमें स्वर निकालने के लिये अंगुलियों या हाथों का काम नहीं पड़ता।

शंख को बजाने से पहले और पीछे शुद्ध जल से धो लेना चाहिये। समुद्र या नदियों में जो छोटे-छोटे शंख मिलते हैं उन्हें शंख न कहकर 'शंखनख' कहा जाता है। बजाने के लिये बड़ा शंख ही उपयुक्त होता है। काशी, अयोध्या, प्रयाग, मथुरा, आदि तीर्थ स्थानों में अच्छे-अच्छे शंख बजाने लायक मिल जाते हैं।

शंख के दो भेद मुख्य हैं,-

१. वामावर्त और २. दक्षिणावर्त।

प्रायः वामावर्त शंख ही मिलते हैं। दक्षिणावर्त शंख या तो मिलते ही नहीं और यदि कहीं मिल भी जायें तो उनका मूल्य अधिक होता है। इसीलिये कुछ लोग नकली शंख भी बनाने लगे हैं, असली दक्षिणावर्त शंख की पहचान यह है कि उसमें जहां पर शंख बजाने का छिद्र होता है, उसे मुंह के बजाय कान पर रख लिया जाय तो बड़ी मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है। नकली शंख में यह बात नहीं पाई जाती।

शंख का दर्शन तथा यात्रा के समय शंख की ध्वनि मङ्गल सूचक समझी जाती है। शंख ध्वनि से संक्रामक रोगों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। जहां शंख बजता है वहां पर भगवान विष्णु लक्ष्मी जी का निवास रहता है।

शंख का उपयोग तो केवल भारतवर्ष में ही होता है, किन्तु इसी प्रकार के वाद्यों का उपयोग अन्य देशों के इतिहासों में भी पाया जाता है। आस्ट्रेलिया और पोलीनेशिया द्वीप के निवासी शंख के बदले 'टिटन - टोनिस' नामक एक प्रकार के घोंघे को काटकर शंख की भांति बजाते थे, इसी प्रकार पाश्चात्य सभ्य जातियों में भी 'बुकसिनम् व्हेल्क' नामक शम्बूक बजाने की प्रथा है।

शंख को अभिमन्त्रित करने का भी शास्त्रों में विधान मिलता है। शंख मुद्रा इस प्रकार बनेगी-

दाहिने हाथ की मुट्ठी से बाँये हाथ के अंगूठे को पकड़ कर एवं वांये हाथ की अँगुलियों को सटाकर सामने फैलाकर उनके द्वारा दाहिने हाथ के सामने फैले अंगूठे को स्पर्श करने से शंख मुद्रा बनती है।

यह शंख मुद्रा भगवान विष्णु की १९ मुद्राओं में प्रमुख मुद्रा है। शंख पूजन के समय यह मुद्रा काम में आती है।

देवपूजन में तो शंख का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, 'वराहपुराण' में लिखा है कि विना शंखध्वनि किये देवमन्दिर का द्वार नहीं खोलना चाहिये। जो मनुष्य शंखादि की ध्वनि किये बिना भगवान को जगा देता है, यह जन्म जन्मान्तर में बहरा होता है। बिना शंख बजाए भगवान को जगाना, यह विष्णु पूजा के ३२ अपराधों में से १ अपराध है-

"विना भेर्य्यादिशब्देन द्वारस्योद्घाटनं मम।
महापराधं जानीयाद्वात्रिंशन्तं मम प्रिये॥"[iv]

'बृहन्नारदीय पुराण' के अनुसार देव मन्दिर में शंख ध्वनि करने वाला सब पापों से छूट जाता है।

शंख की उत्पत्ति इस प्रकार बताई जाती है कि शंखचूड़ नामक दैत्य को मारकर भगवान शंकर ने उसकी हड्डियां समुद्र में फेंक दी। उन्हीं हड्डियों से समुद्र में नाना प्रकार के शंख उत्पन्न हो गये। इसीलिये शिव पूजा में शंख से जल चढ़ाना वर्जित है। शेष सभी देवताओं को शंखोदक अत्यन्त प्रिय है। बताया जाता है कि विश्व का सबसे बड़ा शंख केरल स्थित गुरुवयुर के श्रीकृष्ण मन्दिर में है। इस शंख की लम्बाई लगभग आधा मीटर और वजन २ किलोग्राम है। यद्यपि बड़े आकार के कारण इसका प्रयोग दैनिक पूजा-कार्यो मे नही किया जाता लेकिन यह एक मांगलिक दूर्लभ वस्तु के रूप में इस मन्दिर की शोभा बढ़ा रहा है।

हम शंख की पूजा भी करते हैं, देवताओं की पूजा अर्चा के समय शाखनाद के द्वारा मंगल ध्वनि करते हैं। बंगाल में विवाह के अवसर पर शंख ध्वनि अनिवार्य मानी जाती है। बंगाली महिलाएँ शंख की चूडियाँ, शंख की मालाएँ पहनती है और ज्योतिषी भी

चन्द्रदोष दूर करने के लिए मोती उपलब्ध न होने पर उसके स्थान पर शंख की अंगूठी पहनने का परामर्श देते है। पूजा के समय शंख से जल चढाने की प्रथा हमारे यहाँ प्रचलित है ।

पूजन के समय जो शंखनाद किया जाता है उसमें भी रोगनिवारण की बहुत बड़ी शक्ति है। शंख बजाने वाले व्यक्ति को श्वास रोकनी पड़ती है, इस प्रकार प्राणायाम की यह एक बड़ी क्रिया सी हो जाती है जिसका प्रभाव फेफड़े पर श्वास की प्रक्रिया पर पड़ता है जिसके फलस्वरूप फेफड़े संबंधी कोई बीमारी नहीं हो पाती। इससे श्वास का रोग तथा टी० बी० आदि नहीं हो पाती। शंखध्वनि से वायुमण्डल में लहरें बड़े वेग से प्रकम्पित होती हैं जिससे दूषित कीटाणुओं का नाश होता है। वेद में आया है-

"शंखेन हत्वा रक्षांस्यत्रिणो वि षहामहे॥"[v]

इससे हम लोग जो यह कहते हैं कि शंखध्वनि से राक्षस भाग जाते हैं सो अन्य भयदायक राक्षस जो भागते हैं सो तो है ही, प्रत्यक्ष में यह संक्रामक विषाक्त रोगाणु रूपी राक्षस तो नष्ट ही हो जाते हैं। शंख बजाने वाले को गण्डमाला का भी रोग नहीं होता। उसका वक्षस्थल विशाल तथा फेफड़े बलवान हो जाते हैं। शंख ध्वनि के प्रभाव से वातावरण पवित्र हो जाता है और नकारात्मक शक्तियां दूर होती हैं। शास्त्रों के अनुसार- शंख पूजन से सुख- शांति व लक्ष्मी का घर में प्रवेश होता है। शंख ध्वनि सुनकर देवी-देवता प्रसन्न होते हैं और शुभ आशीष देते हैं। देवी के आयुधों (अस्त्रों) में से एक आयुध शंख है।

पूजन आरती के बाद जो शंख में जल लेकर घुमाकर फेका जाता है तथा प्रक्षालन किया जाता है उस जल का भी बड़ा प्रभाव होता है। वैसे भी शंख की भस्म का प्रयोग वैद्य लोग करते हैं। इस प्रकार शंख से बहुत लाभ हैं ।

शास्त्रों में भी कहा गया है कि-

यस्तु शंखध्वनिं कुर्यात् पूजाकाले विशेषतः,
वियुक्तः सर्वपापेन विष्णुनां सह मोदते।

अर्थात पूजा के समय जो व्यक्ति शंख ध्वनि करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वह भगवान विष्णु के साथ आनन्द करता है। पूजा के प्रारम्भ एवं समाप्ति पर शंख ध्वनि करने का विधान वैदिक काल से ही रहा है।

इस तरह सभी मांगलिक और शुभ कार्यो को समारंभ और उन्हे विधिवत सपन्न करते समय शंखध्वनि का प्रयोग किया जाता है। यह ध्वनि प्रणवनाद भी व्यक्त करती है। यही कारण है कि शंख के बिना किसी देवालय, शुभ-कार्य तथा धार्मिक अनुष्ठान की परिकल्पना नहीं की जा सकती। शंख भारत का पुरातन राष्ट्रीय याद्य है और वह मङ्गल का प्रतीक माना गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

[i] श्रीमद्भगवद्गीता – 1/12
[ii] श्रीमद्भगवद्गीता – 1/15-16
[iii] श्रीमद्भगवद्गीता – 1/19
[iv] वराहपुराणम् – 117/35
[v] अथर्ववेद संहिता – 4/10/2